

समांतर चेतावनियाँ - संख्या दो

भविष्यसूचक ताना-बाना का अनावरण: मिलराइट इतिहास और आज के संदर्भ में प्रकाशितवाक्य 14 के संदेशों की व्याख्या

Jeff Pippenger

2023-08-08

जब दस कुँवारियों का दृष्टांत मिलराइट इतिहास में पूरा हुआ, तब वह दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के दौरान हुआ। दूसरा स्वर्गदूत का संदेश समयावधि और लक्षित श्रोताओं—दोनों की दृष्टि से—दो भिन्न संदेशों का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरा स्वर्गदूत का संदेश उन प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं की ओर निर्देशित था जो अभी-अभी रोम की ओर लौट गई थीं और बाबुल की बेटियाँ बन गई थीं। आधी रात की पुकार सोए हुए मिलराइटों की ओर निर्देशित थी। पहला संदेश मिलराइटों के बाहर के लोगों की ओर निर्देशित था, दूसरा भीतर की ओर। यह हमारे दिनों में अक्षरशः पूरा होगा।

हमारे समय में जो पुनरावृत्ति हो रही है, उसमें ध्यान देने योग्य अंतर यह है कि एडवेंटवाद की शुरुआत में दूसरे स्वर्गदूत का संदेश पहले मिलराइट्स के बाहर गया, और फिर उसी संदेश का दूसरा भाग मिलराइट्स के भीतर पहुँचा। एडवेंटवाद के अंत में, जब वह दृष्टांत फिर से दोहराया जाता है, तो दूसरे स्वर्गदूत का संदेश भी दोहराया जाता है। यह हमें कई बार स्पष्ट रूप से बताया गया है। परंतु अंत में संदेश की दोहरी प्रकृति उलट जाती है। पहला संदेश एडवेंटवाद के भीतर जाता है और दूसरा एडवेंटवाद के बाहर वालों के पास। हमें बताया गया है कि प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के स्वर्गदूत द्वारा दर्शाया गया कार्य और संदेश, दूसरे स्वर्गदूत के संदेश की पुनरावृत्ति है।

भविष्यद्वक्ता कहता है, 'मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास बड़ा सामर्थ्य था; और पृथ्वी उसकी महिमा से प्रकाशमान हो गई। और उसने बड़े शब्द से बलपूर्वक पुकारकर कहा, बाबुल महान गिर पड़ा है, गिर पड़ा है, और दुष्टात्माओं का निवासस्थान बन गया है' (प्रकाशितवाक्य 18:1, 2)। यह वही संदेश है जो दूसरे स्वर्गदूत ने दिया था। बाबुल गिर पड़ा है, 'क्योंकि उसने अपने व्यभिचार के क्रोध का दाखमधु सब जातियों को पिलाया' (प्रकाशितवाक्य 14:8)। वह दाखमधु क्या है?—उसकी झूठी शिक्षाएँ। उसने चौथी आज्ञा के विश्रामदिन के स्थान पर संसार को एक झूठा विश्रामदिन दे दिया है, और उस झूठ को फिर से दोहराया है जो शैतान ने एदन में पहले हव्वा से कहा था—आत्मा का स्वाभाविक अमरत्व। ऐसी बहुत-सी समान भ्रांतियाँ उसने दूर-दूर तक फैलाई हैं, 'मनुष्यों की आज्ञाओं को उपदेश के रूप में सिखाते हुए' (मत्ती 15:9)।

जब यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरंभ की, तो उन्होंने मंदिर को उसके धर्मनिंदात्मक अपवित्रीकरण से शुद्ध किया। उनकी सेवकाई के अंतिम कार्यों में से एक मंदिर का दूसरी बार शुद्धीकरण था। इसी प्रकार, संसार को चेतावनी देने के अंतिम कार्य में कलीसियाओं को दो भिन्न बुलाहटें दी जाती हैं। दूसरे स्वर्गदूत का संदेश है, 'बाबुल गिर पड़ा, गिर पड़ा, वह महान नगर; क्योंकि उसने सब जातियों को अपने व्यभिचार के कोप की दाखमधु पिलाई है' (प्रकाशितवाक्य 14:8)। और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की तेज़ पुकार में स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई देती है: 'हे मेरे लोगो, उस से बाहर निकल आओ, कहीं ऐसा न हो कि उसके पापों में तुम्हारी भी सहभागिता हो, और उसकी मारियों में से कुछ तुम्हें लगे; क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसके अधर्मों को स्मरण किया है' (प्रकाशितवाक्य 18:4, 5)। चुने हुए संदेश, पुस्तक 2, 118.

एडवेंटवाद के प्रारम्भ में दूसरे स्वर्गदूत का संदेश वही है जो प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के स्वर्गदूत द्वारा प्रस्तुत किया गया है, और उस चेतावनी में दो आवाज़ें हैं जो संदेश की घोषणा करती हैं। पहली आवाज़ तब सुनाई देती है जब पृथ्वी उसकी महिमा से आलोकित हो जाती है, और पद चार में यूहन्ना ने एक और आवाज़ सुनी जो कह रही थी, "उसमें से निकल आओ।"

मिलरवादी इतिहास में पहले बाबुल से बाहर निकलने का आह्वान आया और मिलरवादियों के लिए संदेश बाद में आया। प्रकाशितवाक्य के अठारहवें अध्याय में दूसरी आवाज़, या दूसरा संदेश, एडवेंटवाद के बाहर के लोगों को संबोधित करता है। इस घोषणा के साथ कि 'कलीसियाओं को दो पृथक आह्वान किए गए हैं', हम पाते हैं कि जिन दो अवसरों पर मसीह ने मंदिर को शुद्ध किया (अपनी सेवकाई की शुरुआत और अंत में), वे एडवेंटवाद की शुरुआत और समाप्ति का भी एक चित्रण हैं।

एडवेंटिज़्म की शुरुआत ने कार्यकर्ताओं के एक शुद्धिकरण को दर्शाया, जिसने उस नींव के निर्माण में मदद की जिसे स्थापित करने के लिए विलियम मिलर का उपयोग किया गया था। दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के समापन पर वह नींव पूर्ण हो गई, क्योंकि 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे स्वर्गदूत के आगमन के साथ एडवेंटिज़्म की नींव बनाने वाले सत्य, सुनने के इच्छुक लोगों के समझने के लिए, उपलब्ध करा दिए गए।

नींव रखने का कार्य दूसरे स्वर्गदूत के इतिहास के चरम पर समाप्त हुआ, जब "कलीसियाओं को दो भिन्न बुलाहटें दी गईं।" पहली बुलाहट मिलराइटों से बाहर थी, दूसरी मिलराइटों के लिए थी। परन्तु एक और आरम्भ, जो एडवेंटवाद के आरम्भ के साथ मेल खाता है, वह मसीह की सेवकाई है जब उन्होंने पहली बार अपने मंदिर को शुद्ध किया। मंदिर की शुद्धि का भविष्यसूचक चित्रण उनकी सेवकाई के आरम्भ और अंत, दोनों में एक शुद्धिकरण को चिह्नित करता है, जो बदले में एडवेंटवाद के अपने आरम्भ और अंत में होने वाले शुद्धिकरण का प्रतिरूप है। मसीह की मंदिर-शुद्धि की दो घटनाएँ एडवेंटवाद के आरम्भ और अंत के साथ मेल खाती हैं, परन्तु उनका संदेश केवल उनके वाचा के लोगों के लिए था, जो परमेश्वर से सदा के लिए अलग हो जाने की प्रक्रिया में थे।

एडवेंटिज़्म की शुरुआत ने ऐसा संदेश प्रस्तुत किया जो न्याय के उद्घाटन की घोषणा करता था, और एडवेंटिज़्म का अंत न्याय के अंत की घोषणा कर रहा है। यीशु ने पहली बार मंदिर को शुद्ध किया और यहूदियों को डाँटा कि उन्होंने उसके घर को डाकुओं की गुफा बना दिया था, परन्तु मंदिर की दूसरी शुद्धि उसकी सेवकाई के "अंतिम कार्यों में से एक" थी। अपनी सेवकाई के अंत में उसने यहूदियों से यह कहना छोड़ दिया कि उन्होंने उसके पिता के घर को डाकुओं की गुफा बना दिया है; तब उसने उनसे कहा कि उनका घर "उनके लिए उजाड़ छोड़ दिया गया है।"

इस बीच हर राष्ट्र से उपासक उस मंदिर का रुख करते थे जो परमेश्वर की उपासना के लिए समर्पित किया गया था। सोने और बहुमूल्य रत्नों से झिलमिलाता हुआ, वह सौंदर्य और वैभव का एक अद्भुत दर्शन था। परन्तु यहोवा अब उस रमणीय महल में नहीं पाया जाता था। इस्राएल ने एक राष्ट्र के रूप में अपने को परमेश्वर से अलग कर लिया था। जब मसीह ने, अपनी सांसारिक सेवकाई के अंत के निकट, मंदिर के आंतरिक भाग पर अंतिम बार दृष्टि डाली, तो उन्होंने कहा, 'देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है।' मत्ती 23:38। अब तक वे मंदिर को अपने पिता का घर कहते थे; परन्तु जैसे ही परमेश्वर का पुत्र उन दीवारों से बाहर निकला, परमेश्वर की उपस्थिति सदा के लिए उस मंदिर से, जो उसकी महिमा के लिए बनाया गया था, हटा ली गई। प्रेरितों के काम, 145.

शुरुआत में जिसे उन्होंने शुद्ध किया था, वह मंदिर अंत में शुद्ध किए गए मंदिर से भिन्न था। पहला मंदिर उनके पिता का घर था, पर दूसरा मंदिर यहूदियों का घर था। प्रभु ने शुरुआत में एडवेंटिज़्म के साथ वाचा बाँधी, और एडवेंटिस्ट उनके मंदिर में याजक बन गए। एडवेंटिज़्म के अंत में, वे अब याजक नहीं रहेंगे, और उनका घर उजाड़ छोड़ दिया जाएगा।

दूसरा स्वर्गदूत दो संदेशों का प्रतिनिधित्व करता है। यही एक कारण है कि इस संदेश को बाबुल के दो बार गिरने के रूप में दर्शाया गया है। यह बाबुल के पतन की दो बार की गई घोषणा का मुख्य कारण नहीं है, पर यह एक कारण है। यह कैसे दो संदेश हैं?

पहले स्वर्गदूत के संदेश को अस्वीकार किए जाने के जवाब में दूसरा स्वर्गदूत आया। जब 2300-वर्ष की भविष्यवाणी का समापन 1843 में होगा—यह बताने वाली वह भविष्यवाणी विफल सिद्ध हुई, तब प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं ने उसी

त्रुटिपूर्ण भविष्यवाणी को आधार बनाकर मिलर के संदेश को ठुकरा दिया। मिलर का संदेश ही पहले स्वर्गदूत का संदेश था। जब उसे अस्वीकार किया गया, तब वे प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ, जो 1260 वर्षों से अधिक समय तक जंगल में परमेश्वर की कलीसिया रही थीं, अस्वीकृत कर दी गईं और बाबेल की पुत्री बन गईं। उसी समय दूसरा स्वर्गदूत अपना संदेश लेकर आया।

हम जिस इतिहास के विभिन्न तत्वों पर विचार कर रहे हैं, उनसे जुड़े कुछ बहुत महत्वपूर्ण बिंदु हैं। कम से कम एक बिंदु ऐसा है जिसे धीरे-धीरे विकसित करना होगा, क्योंकि वह निस्संदेह यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य के उस संदेश की समझ में योगदान देता है जो वर्तमान में खोला जा रहा है। इसी कारण, मैं उस इतिहास के बारे में एक बहुत महत्वपूर्ण अंश शामिल कर रहा हूँ। जिनकी ओर मैं संकेत कर रहा हूँ, वे दो अध्याय हैं, लेकिन उन दोनों अध्यायों के बीच एक तीसरा महत्वपूर्ण अध्याय भी है। हमारे विचार-विमर्श के दायरे को सीमित रखने के लिए मैं इसे इस समय शामिल नहीं कर रहा हूँ।

पढ़ते समय ध्यान दें कि किस स्वर्गदूत को संबोधित किया जा रहा है; क्रमिक परीक्षण प्रक्रिया को खोजें; पहले अनुच्छेद में यह नोट करें कि प्रकाशितवाक्य अठारह के स्वर्गदूत की भविष्यसूचक विशेषताएँ पहले स्वर्गदूत की भी विशेषताएँ हैं। ध्यान दें कि संदेशों में से किसी एक को कूस पर चढ़ाना मसीह को कूस पर चढ़ाने के समान है, और यह भी कि तीनों स्वर्गदूतों को एक-एक स्वर्गदूत के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि आधी रात की पुकार का संदेश अनेक स्वर्गदूतों द्वारा दिया गया है।

मुझे दिखाया गया कि समस्त स्वर्ग ने पृथ्वी पर हो रहे कार्य में कैसी रुचि ली हुई थी। यीशु ने एक शक्तिशाली और पराक्रमी स्वर्गदूत को नियुक्त किया कि वह नीचे उतरकर पृथ्वी के निवासियों को चेतावनी दे कि वे उसके दूसरे आगमन के लिए तैयार हो जाएँ। मैंने देखा कि वह पराक्रमी स्वर्गदूत स्वर्ग में यीशु की उपस्थिति से निकल पड़ा। उसके आगे अत्यंत उज्ज्वल और महिमामय प्रकाश जा रहा था। मुझे बताया गया कि उसका उद्देश्य अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करना और मनुष्यों को परमेश्वर के आने वाले कोप के विषय में चेतावनी देना था। असंख्य लोगों ने उस प्रकाश को ग्रहण किया। कुछ अत्यंत गंभीर प्रतीत हुए, जबकि अन्य आनन्दित और विभोर हो उठे। प्रकाश सब पर उंडेला गया, परन्तु कुछ लोग केवल उसके प्रभाव में तो आए, पर उसे हृदय से स्वीकार नहीं किया। परन्तु जिन्होंने उसे स्वीकार किया, उन सब ने अपना मुख स्वर्ग की ओर उठाया और परमेश्वर की महिमा की। बहुतों के भीतर भयंकर क्रोध भर गया। धर्मोपदेशकों और लोगों ने दुष्टों के साथ मिलकर उस पराक्रमी स्वर्गदूत द्वारा फैलाए गए प्रकाश का हठपूर्वक विरोध किया। परन्तु जिन्होंने उसे स्वीकार किया, वे संसार से अलग हो गए और आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ गए।

शैतान और उसके स्वर्गदूत जितनों के मनो को वे प्रकाश से दूर खींच सकते थे, उन्हें दूर खींचने के प्रयत्न में बड़ी व्यस्तता से लगे थे। जिन्होंने उसे ठुकरा दिया, वे अंधकार में छोड़ दिए गए। मैंने देखा कि एक स्वर्गदूत अत्यन्त रुचि के साथ उन लोगों को देख रहा था जो अपने को परमेश्वर के लोग कहते थे, ताकि जब उनके सम्मुख स्वर्गीय मूल का संदेश प्रस्तुत किया गया, तब वे जो चरित्र विकसित कर रहे थे, उसका लेखा वह लिख ले। और जब बहुत से लोग, जो यीशु के प्रति प्रेम का दावा करते थे, उस स्वर्गीय संदेश से तिरस्कार, उपहास और घृणा के साथ मुड़ गए, तो हाथ में चर्मपत्र लिए एक स्वर्गदूत ने वह लज्जाजनक लेखा दर्ज किया। समस्त स्वर्ग आक्रोश से भर गया, क्योंकि यीशु को उसके कथित अनुयायियों ने उपेक्षित किया।

मैंने विश्वास करने वालों की निराशा देखी। वे अपने प्रभु को अपेक्षित समय पर नहीं देख पाए। भविष्य को छिपाए रखना और अपने लोगों को निर्णय के एक मोड़ पर लाना, परमेश्वर का उद्देश्य था। इस समय-बिंदु के बिना परमेश्वर द्वारा नियोजित कार्य पूरा नहीं होता। शैतान बहुतों के मनो को बहुत दूर भविष्य में ले जा रहा था। मसीह के प्रकट होने के लिए घोषित एक अवधि मन को वर्तमान तैयारी की गंभीर खोज करने के लिए प्रेरित करनी ही थी। समय बीतते ही, जिन्होंने स्वर्गदूत का प्रकाश पूरी तरह प्राप्त नहीं किया था, वे उन लोगों के साथ मिल गए जिन्होंने स्वर्गीय संदेश का तिरस्कार किया था, और वे उपहास करते हुए निराश जनों पर टूट पड़े। मैंने स्वर्ग में स्वर्गदूतों को यीशु से परामर्श करते हुए देखा। उन्होंने जो अपने को मसीह का अनुयायी कहते थे, उनकी स्थिति

पर ध्यान दिया था। निश्चित समय के बीत जाने ने उन्हें परखा और साबित किया, और बहुत से तराजू में तोले गए और कम पाए गए। वे सब ऊँची आवाज़ में अपने को मसीही कहते थे, फिर भी लगभग हर बात में मसीह का अनुसरण करने में असफल रहे। मसीह के नामधारी अनुयायियों की इस दशा पर शैतान इतराया। वह उन्हें अपने जाल में फँसा चुका था। उसने बहुसंख्यक को सीधी राह छोड़ने के लिए उकसाया, और वे किसी और रास्ते से स्वर्ग पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। स्वर्गदूतों ने देखा कि निष्कलंक, शुद्ध और पवित्र, सिय्योन के पापियों और संसार-प्रेमी कपटियों के साथ घुल-मिल गए हैं। वे यीशु के सच्चे प्रेमियों की देखभाल करते रहे थे; परन्तु दूषित लोग पवित्रों को प्रभावित कर रहे थे।

जिनके हृदय यीशु को देखने की तीव्र लालसा से जल रहे थे, उन्हें उनके कथित भाइयों ने उसके आगमन की बात करने से रोक दिया। स्वर्गदूतों ने समूचे दृश्य को देखा, और उन शेष लोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट की, जो यीशु के प्रगटन से प्रेम करते थे। एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत को पृथ्वी पर उतरने का आदेश दिया गया। यीशु ने उसके हाथ में एक लिखित संदेश रखा, और पृथ्वी पर आते ही उसने पुकारा, "बाबुल गिर पड़ा है! गिर पड़ा है!" तब मैंने देखा कि निराश हुए लोग फिर प्रसन्न दिखने लगे, और उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं, अपने प्रभु के प्रगटन को विश्वास और आशा से निहारते हुए। परन्तु बहुत से लोग मानो सोए हों, एक जड़-सी अवस्था में बने रहे; फिर भी मैं उनके चेहरों पर गहरे दुःख की छाप देखता था। निराश हुए लोगों ने बाइबल से देखा कि वे विलंब के समय में हैं, और यह कि उन्हें दर्शन की पूर्ति के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए। वही प्रमाण जिसने उन्हें 1843 में अपने प्रभु की प्रतीक्षा करने को प्रेरित किया था, ने उन्हें 1844 में भी उसकी अपेक्षा करने के लिए प्रेरित किया। मैंने देखा कि अधिकांश में वह उत्साह नहीं रहा जो 1843 में उनके विश्वास की पहचान था। उनकी निराशा ने उनके विश्वास को मंद कर दिया था। परन्तु जब निराश हुए लोग दूसरे स्वर्गदूत की पुकार में एकजुट हुए, तो स्वर्गीय सेना ने अत्यंत रुचि से देखा और उस संदेश के प्रभाव पर ध्यान दिया। उन्होंने देखा कि जो मसीही नाम धारण किए हुए थे, वे उन पर, जो निराश हुए थे, उपहास और तिरस्कार करने लगे। जैसे ही ठट्ठा करने वाले के होंठों से ये शब्द निकले, "तुम अभी तक ऊपर नहीं उठे!", एक स्वर्गदूत ने उन्हें लिख लिया। स्वर्गदूत ने कहा, वे परमेश्वर का उपहास करते हैं।

मुझे एलियाह के उठा लिए जाने की घटना की ओर फिर से इंगित किया गया। उसका चोगा एलीशा पर गिरा, और दुष्ट बच्चे (या युवा लोग) उसका पीछा करने लगे, ठट्ठा करते हुए चिल्लाए, "ऊपर जा, गंजे सिर! ऊपर जा, गंजे सिर!" उन्होंने परमेश्वर का उपहास किया, और वहीं उन्हें अपनी सज़ा मिली। यह उन्होंने अपने माता-पिता से सीखा था। और जिन्होंने पवित्र जनों के ऊपर उठ जाने के विचार का उपहास उड़ाया और ठट्ठा किया है, उन पर परमेश्वर की विपत्तियाँ आएँगी, और वे समझेंगे कि उसके साथ खिलवाड़ करना कोई छोटी बात नहीं है।

यीशु ने अन्य स्वर्गदूतों को आदेश दिया कि वे शीघ्रता से उड़कर उसके लोगों के मुरझाए हुए विश्वास को जागृत और दृढ़ करें, और उन्हें दूसरे स्वर्गदूत का संदेश तथा उस महत्वपूर्ण कदम को समझने के लिए तैयार करें जो शीघ्र ही स्वर्ग में उठाया जाने वाला था। मैंने देखा कि इन स्वर्गदूतों ने यीशु से महान शक्ति और ज्योति प्राप्त की, और दूसरे स्वर्गदूत के कार्य में सहायता देने हेतु अपना आदेश पूरा करने के लिए शीघ्रता से पृथ्वी पर उड़ आए। जब स्वर्गदूत पुकारे, तो परमेश्वर के लोगों पर एक महान प्रकाश चमका: "देखो, दूल्हा आता है; उससे मिलने बाहर निकलो।" तब मैंने उन निराश लोगों को उठ खड़ा होते देखा, और दूसरे स्वर्गदूत के साथ एक स्वर में घोषणा करते हुए: "देखो, दूल्हा आता है; उससे मिलने बाहर निकलो।" स्वर्गदूतों से निकला प्रकाश हर ओर के अंधकार को भेद गया। शैतान और उसके स्वर्गदूतों ने इस प्रकाश के फैलने और अपने उद्दिष्ट प्रभाव डालने से रोकने का प्रयास किया। वे परमेश्वर के स्वर्गदूतों से भिड़े, और उनसे कहा कि परमेश्वर ने लोगों को धोखा दिया है, और यह कि अपनी सारी ज्योति और शक्ति के साथ भी वे लोगों को यह विश्वास नहीं दिला सकते कि यीशु आ रहे हैं। शैतान मार्ग अवरुद्ध करने और लोगों का मन प्रकाश से हटाने का प्रयत्न करता रहा, फिर भी परमेश्वर के स्वर्गदूत अपना काम करते रहे। जिन्होंने इसे स्वीकार किया वे बहुत प्रसन्न दिखाई दिए। उन्होंने अपनी दृष्टि स्वर्ग की ओर टिकाई, और यीशु के प्रकट होने की लालसा की। कुछ लोग बड़ी व्यथा में थे, रोते और प्रार्थना करते हुए। उनकी निगाहें मानो अपने ही ऊपर जमी हुई थीं, और वे ऊपर देखने का साहस नहीं करते थे।

स्वर्ग से आया एक अनमोल प्रकाश उनसे अंधकार को अलग कर दिया, और उनकी आँखें, जो निराशा में अपने ही ऊपर जमी हुई थीं, ऊपर की ओर उठ गईं, जबकि प्रत्येक चेहरे पर कृतज्ञता और पवित्र आनंद झलक रहा था। यीशु और समस्त स्वर्गदूतों की मण्डली ने उन विश्वासयोग्य, प्रतीक्षारत जनों की ओर अनुमोदन की दृष्टि से देखा।

जिन्होंने पहले स्वर्गदूत के संदेश के प्रकाश को ठुकराया और उसका विरोध किया, उन्होंने दूसरे का प्रकाश खो दिया, और उस संदेश, देखो, दूल्हा आता है, के साथ रहने वाली शक्ति और महिमा से लाभान्वित नहीं हो सके। यीशु ने त्वोरियाँ चढ़ाकर उनसे मुँह फेर लिया। उन्होंने उसका अनादर किया और उसे ठुकराया था। जिन्होंने संदेश को ग्रहण किया, वे महिमा के बादल में आच्छादित हो गए। वे परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए प्रतीक्षा करते, जागते और प्रार्थना करते रहे। वे उसे अप्रसन्न करने से बहुत डरते थे। मैंने शैतान और उसके स्वर्गदूतों को परमेश्वर के लोगों से इस दैवीय प्रकाश को छिपाने की कोशिश करते देखा; परंतु जब तक प्रतीक्षा करने वाले उस प्रकाश को संजोए रहे, और अपनी निगाहें पृथ्वी से हटाकर यीशु पर टिकाए रहे, तब तक शैतान के पास उन्हें इस अनमोल प्रकाश से वंचित करने की कोई शक्ति न थी। स्वर्ग से दिया गया यह संदेश शैतान और उसके स्वर्गदूतों को क्रोधित कर गया, और जो यीशु से प्रेम का दावा करते थे, पर उसके आगमन को तुच्छ समझते थे, उन्होंने विश्वासयोग्य, भरोसा रखने वालों का तिरस्कार और उपहास किया। पर एक स्वर्गदूत ने उनके कथित भाइयों से उन्हें मिले हर अपमान, हर उपेक्षा, हर दुर्व्यवहार को अंकित किया। बहुतों ने अपनी आवाजें उठाकर पुकारा, देखो, दूल्हा आता है, और अपने उन भाइयों को छोड़ गए जो यीशु के प्रकट होने से प्रेम नहीं रखते थे, और जो उन्हें उसके दूसरे आगमन पर मनन करने नहीं देते थे। मैंने देखा कि यीशु ने उन लोगों से अपना मुख फेर लिया जो उसके आगमन को अस्वीकार करते और तुच्छ जानते थे, और फिर उसने स्वर्गदूतों को आज्ञा दी कि वे उसके लोगों को अशुद्धों के बीच से बाहर ले चलें, कहीं वे मलिन न हो जाएँ। जो संदेशों के आज्ञाकारी थे, वे स्वतंत्र और एकजुट होकर अलग खड़े हुए। उन पर एक पवित्र और उत्कृष्ट प्रकाश चमका। उन्होंने संसार का त्याग किया, उससे अपने स्नेह को उखाड़ फेंका, और अपने सांसारिक हितों का बलिदान किया। उन्होंने अपनी सांसारिक धन-संपत्ति त्याग दी, और उनकी उत्कंठित दृष्टि स्वर्ग की ओर लगी रही, अपने प्रिय उद्धारकर्ता को देखने की आशा करते हुए। उनके मुखमंडलों पर पवित्र, दिव्य आनंद झलक रहा था, और वह भीतर राज्य कर रही शांति और आनंद का परिचय देता था। यीशु ने अपने स्वर्गदूतों को जाने और उन्हें सामर्थ देने की आज्ञा दी, क्योंकि उनकी परीक्षा की घड़ी निकट आ रही थी। मैंने देखा कि ये प्रतीक्षा करने वाले अभी वैसे नहीं परखे गए थे जैसे उन्हें परखा जाना चाहिए। वे त्रुटियों से मुक्त नहीं थे। और मैंने परमेश्वर की दया और भलाई देखी कि उसने पृथ्वी के लोगों को चेतावनी भेजी, और बारंबार संदेश दिए ताकि उन्हें एक निश्चित समय-बिंदु पर पहुँचा दे, उन्हें अपने आप की लगन से जाँच-पड़ताल करने को अग्रसर करे, ताकि वे उन त्रुटियों को त्याग दें जो अन्यजातियों और पोपवादियों से चली आई हैं। इन संदेशों के द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को वहाँ निकाल कर ला रहा है जहाँ वह उनके लिए अधिक सामर्थ से काम कर सके, और जहाँ वे उसकी सब आज्ञाएँ मान सकें. . . .

जब पवित्र स्थान में यीशु की सेवकाई समाप्त हुई, और वे परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर गए और उस सन्दूक के सामने खड़े हुए जिसमें परमेश्वर की व्यवस्था थी, तब उन्होंने तीसरा संदेश लेकर एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत को पृथ्वी पर भेजा। उन्होंने स्वर्गदूत के हाथ में एक चर्मपत्र रखा, और जब वह महिमा और सामर्थ के साथ पृथ्वी पर उतरा, तो उसने एक भयावह चेतावनी सुनाई, जो मनुष्य तक अब तक पहुँचाई गई सबसे भयानक धमकी थी। यह संदेश परमेश्वर की सन्तानों को सावधान करने और उनके सामने आने वाले परीक्षा और क्लेश के समय को दिखाने के लिए था। स्वर्गदूत ने कहा, उन्हें पशु और उसकी प्रतिमा के साथ निकट संघर्ष में ला दिया जाएगा। उनके लिए अनन्त जीवन की एकमात्र आशा यह है कि वे दृढ़ बने रहें। यद्यपि उनके प्राण दाँव पर होंगे, तो भी उन्हें सत्य को दृढ़ता से थामे रहना होगा। तीसरा स्वर्गदूत अपने संदेश को इन शब्दों पर समाप्त करता है, यहाँ पवित्र जनों का धैर्य है; यहाँ वे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, और यीशु का विश्वास रखते हैं। जब वह ये शब्द दोहरा रहा था, उसने स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर संकेत किया। जो भी इस संदेश को अपनाते हैं, उनके मन परमपवित्र स्थान की ओर निर्देशित किए जाते हैं, जहाँ यीशु सन्दूक के सामने खड़े हैं, उन सब के लिए अपनी अन्तिम मध्यस्थता करते हुए जिनके लिए दया अभी भी ठहरी हुई है, और उन के लिए भी जिन्होंने अज्ञानतावश परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया है। यह प्रायश्चित्त धर्मी मृतकों के लिए भी किया जाता है, जैसे धर्मी जीवितों के लिए। यीशु उन के लिए प्रायश्चित्त करते हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं के विषय में प्रकाश पाए

बिना मर गए, जिन्होंने अज्ञानतावश पाप किया।

जब यीशु ने परम पवित्र स्थान का द्वार खोला तो सब्त का प्रकाश दिखाई दिया, और परमेश्वर की प्रजा की परीक्षा और परख होनी थी, जैसा कि परमेश्वर ने प्राचीनकाल में इस्राएल की संतानों की परख की थी, यह देखने के लिए कि क्या वे उसकी व्यवस्था का पालन करेंगे। मैंने तीसरे स्वर्गदूत को ऊपर की ओर इशारा करते देखा, जो निराश जनों को स्वर्गीय पवित्रस्थान के परम पवित्र स्थान में जाने का मार्ग दिखा रहा था। वे विश्वास से यीशु का अनुसरण करते हुए परम पवित्र में प्रवेश कर गए। उन्होंने फिर से यीशु को पा लिया, और आनंद व आशा फिर से उमड़ पड़ी। मैंने उन्हें पीछे मुड़कर भूतकाल का पुनरावलोकन करते देखा—यीशु के दूसरे आगमन की घोषणा से लेकर अपनी यात्राओं के दौरान 1844 में समय के बीत जाने तक। वे अपनी निराशा का कारण समझ जाते हैं, और आनंद तथा निश्चय फिर से उनमें उत्साह भर देते हैं। तीसरे स्वर्गदूत ने भूत, वर्तमान और भविष्य को आलोकित कर दिया है, और वे जानते हैं कि वास्तव में परमेश्वर ने अपनी रहस्यमयी प्रबंध द्वारा उनका नेतृत्व किया है।

मुझे यह दिखाया गया कि बचे हुए लोग यीशु का अनुसरण करते हुए अतिपवित्र स्थान में गए, और उन्होंने सन्दूक तथा दया-आसन को देखा, और उनकी महिमा से मोहित हो गए। यीशु ने सन्दूक का ढक्कन उठाया, और देखो! पत्थर की पट्टिकाएँ, जिन पर दस आज्ञाएँ लिखी थीं। वे उन जीवित वचनों का एक-एक करके अनुसरण करते जाते हैं; परन्तु जब वे दस पवित्र उपदेशों के बीच चौथी आज्ञा को जीवित रूप में देखते हैं, तो काँपते हुए पीछे हट जाते हैं, क्योंकि उस पर बाकी नौ से भी अधिक उज्ज्वल प्रकाश चमक रहा है, और उसके चारों ओर महिमा का प्रभामंडल है। उन्हें वहाँ ऐसा कुछ नहीं मिलता जो यह बताए कि सब्त को समाप्त कर दिया गया है, या उसे सप्ताह के पहले दिन में बदल दिया गया है। वह वैसे ही पढ़ा जाता है जैसा परमेश्वर ने पर्वत पर गम्भीर और भयावह विभूति के साथ अपने मुख से कहा था, जब बिजलियाँ चमक रही थीं और गरजें गूँज रही थीं, और जैसा उसने अपनी ही पवित्र उंगली से पत्थर की पट्टिकाओं पर लिखा था। छः दिन तू परिश्रम करेगा और अपना सब काम करेगा; परन्तु सातवाँ दिन तेरे प्रभु परमेश्वर का सब्त है। दस आज्ञाओं की जिस प्रकार देखभाल की गई है, उसे देखकर वे चकित हो जाते हैं। वे उन्हें यहोवा के समीप रखा हुआ देखते हैं, उसकी पवित्रता से आच्छादित और संरक्षित। वे देखते हैं कि वे दशाज्ञा की चौथी आज्ञा को पैरों तले रौंदते रहे हैं, और यहोवा द्वारा पवित्र किए गए दिन के स्थान पर अन्यजातियों और पोपवादियों से चला आया एक दिन मानते रहे हैं। वे परमेश्वर के सम्मुख स्वयं को दीन करते हैं, और अपने भूतकाल के पापों पर शोक करते हैं।

मैंने देखा कि धूपदान की धूप धुआँ बनकर उठ रही थी, जब यीशु उनकी स्वीकारोक्तियों और प्रार्थनाओं को अपने पिता के समक्ष प्रस्तुत कर रहे थे। और जैसे ही वह ऊपर उठी, एक तेजस्वी प्रकाश यीशु पर और कृपा-आसन पर ठहर गया; और वे गंभीर, प्रार्थनाशील जन, जो इसलिए व्याकुल थे कि उन्होंने अपने को परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघनकर्ता पाया था, आशीषित हुए, और उनके मुख आशा और आनन्द से दमक उठे। वे तीसरे स्वर्गदूत के कार्य में सम्मिलित हो गए, और अपनी आवाजें उठाकर गंभीर चेतावनी का प्रचार किया। आरम्भ में थोड़े ही लोगों ने यह संदेश स्वीकार किया, तौभी वे उत्साहपूर्वक चेतावनी सुनाते रहे। तब मैंने देखा कि बहुतों ने तीसरे स्वर्गदूत के संदेश को अपनाया, और जिन्होंने पहले चेतावनी सुनाई थी उनके साथ अपनी आवाजें मिला दीं, और उसके पवित्र ठहराए हुए विश्राम-दिन का पालन करके उन्होंने परमेश्वर का महिमामंडन किया।

तीसरे संदेश को अपनाने वालों में से बहुतों के पास पहले दो संदेशों का अनुभव नहीं था। शैतान यह समझता था, और उन्हें परास्त करने के लिए उसकी दुष्ट दृष्टि उन पर लगी हुई थी; परन्तु तीसरा स्वर्गदूत उनका ध्यान परमपवित्र स्थान की ओर दिला रहा था, और जिनके पास पिछले संदेशों का अनुभव था, वे उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान का मार्ग दिखा रहे थे। बहुतों ने स्वर्गदूतों के संदेशों में सत्य की पूर्ण शृंखला को देखा और हर्षपूर्वक उसे स्वीकार किया। उन्होंने उन्हें उनके क्रम में अपनाया, और विश्वास से यीशु का अनुसरण करते हुए स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश किया। मुझे ये संदेश समुदाय को स्थिर रखने वाले लंगर के समान दिखाए गए। और जैसे-जैसे व्यक्ति इन्हें स्वीकार करते और समझते हैं, वे शैतान के अनेक भ्रमों से सुरक्षित हो जाते हैं।

1844 की बड़ी निराशा के बाद, शैतान और उसके स्वर्गदूत समुदाय के विश्वास को डगमगाने के लिए फंदे बिछाने में व्यस्त थे। वह उन व्यक्तियों के मनों पर प्रभाव डाल रहा था जिन्हें इन बातों में व्यक्तिगत अनुभव था। वे

विनम्रता का आभास देते थे। उन्होंने पहले और दूसरे संदेशों को बदल दिया, और उनकी पूर्ति को भविष्य में ठहराया, जबकि अन्य उन्हें बहुत पीछे अतीत में ठहराते हुए कहने लगे कि उनकी पूर्ति वहाँ हो चुकी थी। ये लोग अनुभवहीनों के मनो को भटका रहे थे और उनके विश्वास को अस्थिर कर रहे थे। कुछ लोग बाइबल की खोज इसलिए कर रहे थे कि समुदाय से स्वतंत्र होकर अपना अलग विश्वास खड़ा करें। शैतान इन सब में उल्लसित था; क्योंकि वह जानता था कि जो लंगर से छूट जाएँगे, उन्हें वह विभिन्न भूलों से प्रभावित कर सकता है और सिद्धांतों की हवाओं से इधर-उधर उड़ा सकता है। जिन लोगों ने पहले और दूसरे संदेश में अग्रणी भूमिका निभाई थी, उनमें से बहुतों ने उन्हें नकार दिया, और पूरे समुदाय में विभाजन और बिखराव हो गया। तब मैंने Wm. Miller को देखा। वे उलझन में दिख रहे थे, और अपने लोगों के लिए शोक और क्लेश से झुके हुए थे। उन्होंने देखा कि 1844 में जो समूह एकजुट और प्रेमपूर्ण था, वे एक-दूसरे के प्रति अपना प्रेम खोते जा रहे हैं और एक-दूसरे का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने उन्हें एक ठंडी, पतनशील अवस्था में लौटते देखा। शोक ने उनकी शक्ति क्षीण कर दी। मैंने देखा कि कुछ अग्रणी पुरुष Wm. Miller पर निगाह रखे हुए थे, इस डर से कि कहीं वह तीसरे स्वर्गदूत का संदेश और परमेश्वर की आज्ञाएँ स्वीकार न कर लें। और जैसे ही वे स्वर्ग से आने वाले प्रकाश की ओर झुकते, ये लोग उनका मन भटकाने के लिए कोई न कोई योजना बना लेते। मैंने देखा कि उनके मन को अंधकार में बनाए रखने और उनके बीच उनका प्रभाव बनाए रखने के लिए मानवीय प्रभाव डाला जा रहा था। अंततः Wm. Miller ने स्वर्ग से आने वाले प्रकाश के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई। उन्होंने उस संदेश को स्वीकार न करके चूक की, जो उनकी निराशा को पूरी तरह समझा देता, और अतीत पर प्रकाश डालता और उसे महिमामय करता, जिससे उनकी क्षीण हो चुकी शक्तियाँ पुनर्जीवित हो जातीं, उनकी आशा उज्ज्वल हो जाती, और वे परमेश्वर की महिमा करते। परंतु उन्होंने दिव्य बुद्धि के स्थान पर मानवीय बुद्धि पर भरोसा किया, और अपने स्वामी के कार्य में कठिन परिश्रम तथा बढ़ती उम्र से टूटे हुए होने के कारण, वे उतने उत्तरदायी नहीं थे जितने वे लोग जिन्होंने उन्हें सत्य से रोके रखा। जिम्मेदारी उन्हीं पर है, और पाप उन्हीं पर ठहरता है। यदि Wm. Miller तीसरे संदेश का प्रकाश देख पाते, तो बहुत सी बातें जो उन्हें अंधेरी और रहस्यमय लगती थीं, समझा दी जातीं। उनके भाइयों ने उनके प्रति इतना गहरा प्रेम और रुचि जताई कि उन्हें लगा वे उनसे अलग नहीं हो सकते। उनका मन सत्य की ओर झुकता; लेकिन फिर वे अपने भाइयों को देखते। वे उसका विरोध करते। क्या वह उनसे अलग हो सकते थे जिन्होंने यीशु के आगमन का प्रचार करते समय उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे थे? उन्हें लगा कि वे निश्चित ही उन्हें भटकाएँगे नहीं।

परमेश्वर ने उसे शैतान की सामर्थ्य के अधीन आने की अनुमति दी, और मृत्यु को उस पर प्रभुत्व रखने दिया। उसने उसे उन लोगों से दूर, जो उसे निरंतर परमेश्वर से दूर खींच रहे थे, कब्र में छिपा दिया। मूसा प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करने ही वाला था, तभी उससे भूल हो गई। इसी प्रकार, मैंने देखा कि Wm. Miller भी स्वर्गीय कनान में शीघ्र प्रवेश करने ही वाला था; तब उससे भी भूल हुई कि उसने अपने प्रभाव को सत्य के विरुद्ध जाने दिया। अन्य लोग उसे इस ओर ले गए। इसके लिए अन्य लोगों को उत्तर देना होगा। परंतु स्वर्गदूत परमेश्वर के इस दास की अनमोल धूल पर निगाह रखे हुए हैं, और अंतिम तुरही की ध्वनि पर वह बाहर आएगा।

मैंने एक समूह को देखा जो सावधान और दृढ़ खड़ा था, और जो उस समूह की स्थापित आस्था को डिगाने की चेष्टा करने वालों को कोई समर्थन नहीं देता था। परमेश्वर ने उन पर प्रसन्नता की दृष्टि डाली। मुझे तीन सीढ़ियाँ दिखाई गईं—एक, दो और तीन—पहले, दूसरे और तीसरे स्वर्गदूतों के संदेश। स्वर्गदूत ने कहा, धिक्कार है उस पर जो इन संदेशों में एक भी ईंट हिलाए या एक भी कील तक को छेड़े। इन संदेशों की सच्ची समझ अत्यंत महत्वपूर्ण है। आत्माओं का भाग्य इस बात पर निर्भर करता है कि इन्हें किस प्रकार ग्रहण किया जाता है। मुझे फिर से इन संदेशों के माध्यम से ले जाया गया, और मैंने देखा कि परमेश्वर के लोगों ने अपना अनुभव कितनी बड़ी कीमत देकर प्राप्त किया है। यह बहुत कष्ट और कठोर संघर्ष के द्वारा प्राप्त हुआ था। परमेश्वर ने उन्हें कदम-दर-कदम आगे बढ़ाया, जब तक कि उसने उन्हें एक ठोस, अडिग मंच पर खड़ा न कर दिया। तब मैंने देखा कि जैसे ही कुछ व्यक्ति उस मंच के पास पहुँचे, वे उस पर चढ़ने से पहले उसकी नींव की जाँच करने लगे। कुछ लोग आनन्द के साथ तुरंत उस पर चढ़ गए। अन्य लोगों ने मंच की नींव डाले जाने में खामियाँ निकालनी शुरू कर दीं। वे चाहते थे कि उसमें सुधार किए जाएँ, तब मंच अधिक परिपूर्ण होगा और लोग बहुत अधिक प्रसन्न होंगे। कुछ लोग मंच से उतरकर उसे परखने लगे; फिर उसमें दोष निकाले, और कहा कि यह गलत ढंग से डाला गया

है। मैंने देखा कि लगभग सभी उस मंच पर दृढ़ता से खड़े थे, और जो उतर गए थे उन्हें अपनी शिकायतें छोड़ देने के लिए समझाया, क्योंकि परमेश्वर प्रधान निर्माणकर्ता था, और वे उसी के विरुद्ध लड़ रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का वर्णन किया, जिनके द्वारा वे उस दृढ़ मंच तक पहुँचे थे; और एकता में लगभग सभी ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और ऊँचे स्वर से परमेश्वर की महिमा की। इसका प्रभाव उन शिकायत करने वालों में से कुछ पर पड़ा जो मंच छोड़कर चले गए थे, और वे पुनः विनम्र दृष्टि के साथ उस पर चढ़ गए।

मेरा ध्यान मसीह के प्रथम आगमन की घोषणा की ओर फिर से दिलाया गया। यूहन्ना को एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में इस लिए भेजा गया कि वह यीशु के आगमन के लिए मार्ग तैयार करे। जिन्होंने यूहन्ना की गवाही को ठुकराया, वे यीशु की शिक्षाओं से लाभान्वित न हुए। उसके प्रथम आगमन की घोषणा का उन्होंने जो विरोध किया, उसने उन्हें ऐसी स्थिति में ला खड़ा किया कि वे उसके मसीह होने के सबसे प्रबल प्रमाण भी आसानी से ग्रहण न कर सकें। शैतान ने यूहन्ना का संदेश अस्वीकार करने वालों को और आगे बढ़ाया कि वे यीशु को भी अस्वीकार करें और उसे क्रूस पर चढ़ाएँ। ऐसा करके उन्होंने अपने आपको ऐसी दशा में डाल दिया कि वे पेंतेकोस्त के दिन की आशीष ग्रहण न कर सकें, जो उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान के मार्ग की शिक्षा देती। मंदिर के परदे का फट जाना यह दिखाता था कि यहूदी बलिदान और विधि-विधान अब स्वीकार नहीं किए जाएँगे। महान बलिदान चढ़ाया जा चुका था और स्वीकार भी कर लिया गया था, और पेंतेकोस्त के दिन जो पवित्र आत्मा उतरा, उसने चेलों के मनो को पृथ्वी के पवित्रस्थान से स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर उन्मुख किया, जहाँ यीशु अपने ही लहू के द्वारा प्रवेश कर चुका था, और अपने चेलों पर अपने प्रायश्चित के लाभ उंडेले थे। यहूदी पूर्ण भ्रम और घोर अंधकार में छोड़ दिए गए। उद्धार की योजना के विषय में जो प्रकाश उन्हें मिल सकता था, वह सब उन्होंने खो दिया, और फिर भी वे अपने निष्फल बलिदानों और भेंटों पर भरोसा करते रहे। वे पवित्र स्थान में मसीह की मध्यस्थता से लाभ नहीं उठा सके। स्वर्गीय पवित्रस्थान ने पृथ्वी के पवित्रस्थान का स्थान ले लिया था, फिर भी उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान तक पहुँचने के मार्ग का कोई ज्ञान न था।

बहुत से लोग यह देखकर सिहर उठते हैं कि यीशु को अस्वीकार करने और उन्हें क्रूस पर चढ़ाने में यहूदियों ने कैसी राह अपनाई। और जब वे उसके साथ हुए लज्जाजनक दुर्व्यवहार का इतिहास पढ़ते हैं, तो उन्हें लगता है कि वे मसीह से प्रेम करते हैं, और वे न तो पीटर की तरह उसका इन्कार करते और न ही यहूदियों की तरह उसे क्रूस पर चढ़ाते। परन्तु परमेश्वर, जिसने अपने पुत्र के प्रति उनकी घोषित सहानुभूति को देखा है, ने उनकी परीक्षा ली है और यीशु के लिए जिस प्रेम का उन्होंने दावा किया था, उसे कसौटी पर परखा है।

समस्त स्वर्ग ने संदेश के ग्रहण किए जाने को गहरी रुचि से देखा। परन्तु बहुत-से लोग, जो यीशु से प्रेम करने का दावा करते हैं और जो क्रूस की कथा पढ़ते समय आँसू बहाते हैं, संदेश को आनन्द से स्वीकार करने के बजाय क्रोधित हो उठते हैं, यीशु के आगमन के शुभ समाचार का उपहास उड़ाते हैं और उसे भ्रम घोषित करते हैं। वे उसके प्रकट होने से प्रेम करने वालों के साथ सहभागिता नहीं रखते, बल्कि उनसे बैर रखते और उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर देते हैं। जिन्होंने पहले संदेश को अस्वीकार किया, वे दूसरे से लाभान्वित नहीं हो सके, और वे आधी रात की पुकार से भी लाभ नहीं उठा सके, जो उन्हें विश्वास के द्वारा यीशु के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान के परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार करने वाली थी। और इन दो पूर्ववर्ती संदेशों को ठुकराकर वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में, जो परमपवित्र स्थान में जाने का मार्ग दिखाता है, कोई प्रकाश नहीं देख पाते। मैंने देखा कि नामधारी कलीसियाओं ने, जैसे यहूदियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, वैसे ही इन संदेशों को क्रूस पर चढ़ा दिया; इसलिए उन्हें स्वर्ग में हुई उस कार्यवाही का, या परमपवित्र में जाने के मार्ग का कोई ज्ञान नहीं है, और वे वहाँ यीशु की मध्यस्थता से लाभ नहीं उठा सकते। जैसे यहूदी अपने निष्फल बलिदान चढ़ाते थे, वैसे ही वे अपनी निष्फल प्रार्थनाएँ उस कक्ष की ओर अर्पित करते हैं जिसे यीशु छोड़ चुके हैं; और शैतान, मसीह के नामधारी अनुयायियों के इस भ्रम से प्रसन्न होकर, उन्हें अपने फंदे में और कस देता है, धार्मिक रूप धारण करता है, इन नामधारी मसीहियों के मनो को अपनी ओर मोड़ देता है, और अपनी सामर्थ, अपने चिन्हों और झूठे आश्चर्यों से काम करता है। कुछ को वह एक ढंग से, और कुछ को दूसरे ढंग से छलता है। भिन्न-भिन्न मनो पर असर करने के लिए उसने अलग-अलग भ्रम तैयार कर रखे हैं। कुछ एक धोखे को भय के साथ देखते हैं, पर दूसरे को सहज ही स्वीकार कर लेते हैं। शैतान कुछ को आत्मवाद से छलता है। वह ज्योति का स्वर्गदूत बनकर

भी आता है और अपना प्रभाव देशभर में फैलाता है। मैंने हर जगह झूठे सुधार देखे। कलीसियाएँ उल्लसित थीं और समझती थीं कि परमेश्वर उनके लिए अद्भुत रीति से कार्य कर रहा है, जबकि वह दूसरी आत्मा थी। वह मंद पड़कर समाप्त हो जाएगा और संसार तथा कलीसिया को पहले से भी बदतर दशा में छोड़ जाएगा।

"मैंने देखा कि परमेश्वर के ईमानदार बच्चे नाममात्र के एडवेंटिस्टों और पतित कलीसियाओं के बीच भी थे, और विपत्तियों के उंडेले जाने से पहले पादरी और लोग इन कलीसियाओं से अभी भी बाहर बुलाए जाएँगे, और वे आनंदपूर्वक सत्य को अंगीकार करेंगे। शैतान यह जानता है, और तीसरे स्वर्गदूत की प्रबल पुकार से पहले वह इन धार्मिक निकायों में एक हलचल पैदा करता है, ताकि जिन्होंने सत्य को अस्वीकार किया है वे समझें कि परमेश्वर उनके साथ है। वह ईमानदारों को छलने की आशा करता है, और उन्हें यह मानने के लिए प्रेरित करता है कि परमेश्वर अब भी कलीसियाओं के लिए कार्य कर रहा है। परंतु प्रकाश चमकेगा, और प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति पतित कलीसियाओं को छोड़ देगा, और शेष जन के साथ खड़ा होगा।" आध्यात्मिक वरदान, खंड 1, 151-172.

इस अंश में बहुत-सी महत्वपूर्ण सच्चाइयाँ हैं, पर मैं इस अंश का उपयोग मिलेराइट इतिहास के संदेशों की कुछ विशेषताओं को अलग करके देखने के लिए कर रहा हूँ, ताकि समझ सकूँ कि वे हमारे इतिहास का किस प्रकार प्रतिरूप प्रस्तुत करती हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के तीनों स्वर्गदूतों के हाथों में एक संदेश है। दूसरे और तीसरे स्वर्गदूत के बारे में यह बताया गया है कि जब वे अपने संदेश के साथ उतरते हैं, तो उनके पास 'चर्मपत्र' होता है। प्रत्येक स्वर्गदूत एक संदेश का प्रतिनिधित्व करता है, और प्रत्येक संदेश का आगमन एक प्रभाव उत्पन्न करता है।

हम इस विषय को अगले लेख में जारी रखेंगे।